3-4-03

अब बीती को बिन्दी लगाकर नये ब्राह्मण संस्कारों को इमर्ज करो

आज बापदादा के पास हिन्दी के नये वर्ष की मुबारक लेकर वतन में पहुंची तो क्या देखा कि बापदादा बहुत शक्तिशाली रूप से सामने खड़े हैं और बापदादा द्वारा निकली हुई भिन्न-भिन्न लाइट्स जो फैल रही थी वह छत्रछाया के रूप में हो गई। दूर से ही दृश्य बहुत सुन्दर लग रहा था। मैं आगे बढ़ते छत्रछाया के अन्दर जाते हुए बाबा के पास पहुंच गई। ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे सर्व लाइट्स स्वरूप बन गई हूँ। बाबा बोले, बच्ची देखा बापदादा का अपने बच्चों से कितना प्यार है! बाप समझते हैं सदा हर बच्चा ऐसी छत्रछाया में सेफ रहे क्योंकि वर्तमान समय माया के सूक्ष्म वार और समय भी नाजुक हो रहा है और होता रहेगा। इसलिए विश्व रक्षक बाप भी बच्चों की विशेष रक्षा कर रहे हैं। मैं तो बापदादा की यह पालना देख दिल ही दिल में यही अनुभव कर रही थी कि इतना प्यार की पालना करेगा कौन! बापदादा मुस्कराते मुझे स्नेह में देख अपनी बांहों के झूले में झुलाने लगे। वह अतीन्द्रिय सुख तो अपरमअपार था। बोलो, आप सब भी ऐसे अमूल्य झूले का अनुभव कर रहे हो ना? कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा अपनी मीठी दादी ने नये वर्ष की मुबारक सबकी तरफ से दी है और यही कहा है कि नये वर्ष में कोई नई सेवा होनी चाहिए। बाबा मुस्कराते बोले, आपकी मीठी प्यारी दादी को नवीनता करने कराने के उमंग बहुत आते हैं, एक पूरा हुआ दूसरा शुरू हुआ क्योंकि दादी के मन में यही है कि अब जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता होनी चाहिए। अब तो आपकी मीटिंग भी होनी है तो दादी को उमंग बहुत है। देखो सब बच्चों ने भी अभी जो दिल से, उमंग से हर स्थान पर सन्देश देने की सेवा की है वह बहुत अच्छी मुबारक योग्य की है। बड़े दिल से बड़ी संख्या में सन्देश रूपी बीज डाला है। बाबा

खुश है लेकिन अब बापदादा यही चाहते हैं कि अब फैलाई हुई सेवा से जो फल निकला उस क्वालिटी को छांटकर अलग प्रत्यक्ष करो। पहले भी बापदादा ने कहा है कि रिजल्ट निकालो कि –

1- कौन-कौन स्नेही बने जो किस भी रूप से सेवा में निमित्त बनें?
2- कौन समीप सम्पर्क में आये जो सेवा के निमित्त बनें!
3- कौन बच्चे बने और कौन सिर्फ
4- अच्छा कहने वाले बनें?

क्योंकि अब समय अनुसार बापदादा हर क्वालिटी की अलग-अलग माला तैयार देखने चाहते हैं। क्वान्टिटी तो निकाली अब क्वालिटी निकालो। बापदादा देख रहे हैं कि वर्ग वालों ने भी बहुत समय से सेवा की है लेकिन हर वर्ग में सेवा की रिज़ल्ट क्या निकली! कौन-कौन और कितने किस क्वालिटी के निकले, वह बापदादा देखने चाहते हैं क्योंकि उन क्वालिटी वालों की अलग-अलग पालना होनी चाहिए, जिससे वह और समीप आवें। चाहे कहाँ भी उन्हों का संगठन करो क्योंकि बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अब सेवा की रिज़ल्ट प्रत्यक्ष करो। यही इस मीटिंग में राय करो।

उसके बाद बापदादा ने नये वर्ष के लिए ''विघ्न-विनाशक भव!'' कहते वरदान दिया, पद्मगुणा मुबारक दी और अपने दुआ के हस्त घुमाते हर एक बच्चे पर दुआओं की वर्षा की और यही मधुर बोल उच्चारे – '' हे मेरे मास्टर दाता बच्चे, अब हर आत्मा को देते जाओ क्योंकि देना ही स्वत: लेना है।'' यह निमित्त सेवाधारियों का संगठन देख बापदादा को बहुत खुशी है कि वाह मेरे बच्चे कितने मीठे, कितने प्यारे, कितने सिकीलधे रूहानी रूहे गुलाब हो। अब भी विशेष और भविष्य में भी होवनहार हो, तकदीरवान हो। बाप जानते हैं कि हर बच्चा बाप की उम्मीदों का सितारा है। इसलिए अब स्व-परिवर्तन के लिए पुरानी छोटी-मोटी बातों में बार-बार समय, संकल्प

की एनर्जी न दे, अपनी शक्तियों को औरों प्रति महादानी, वरदानी, कल्याणी बनो। अब समय प्रमाण ऐसे व्यर्थ संस्कारों को आलमाइटी गवर्मेन्ट की दृढ़ सील लगाओ जो 5 हज़ार वर्ष तक माया वा प्रकृति की समस्या खोल न सके। अब सभी मिलकर दिल से ऐसी प्रतिज्ञा करो कि बीती सो बीती। बीती को बिन्दी लगाओ और नये ब्राह्मण संस्कारों को इमर्ज करो। आपस में संस्कार मिलन की विचित्र रास करो। दूसरा मिले नहीं मिले मुझे मिलाना है, इसमें हर एक को पहले मैं हे अर्जुन हूँ, यही पाठ पक्का करना है और समय प्रति समय स्वयं को चेक करते रहना है, यही बापदादा की इस संगठन में आश है। बोलो, सब बाप की आशा के दीपक हैं ना!

उसके बाद बापदादा को दादी जानकी की और बड़ी दादी की याद दी। बाबा ने तो दोनों दादियों की याद सुनते ही दोनों रत्नों को हृदय में समा दिया और कहा बाप की महिमा से भी बच्चों की महिमा महान है जो ब्रह्मा बाप के समय तो छोटा परिवार था, अब इतने बड़े परिवार को बाप की तरफ से बहुत हिम्मत उमंग से सम्भाल रही हैं। क्या महिमा करूं बच्चों की। ऐसे कहते ही बाबा ने दोनों को हृदय में लगाए दिल में समा दिया। और बार-बार कहा - बाप बच्चों पर बलिहार है, बलिहार है। ऐसे लवलीन दृश्य देखते मैं भी लवलीन हो साकार वतन में पहुंच गई। अच्छा - ओम् शान्ति